पुरुषोत्तम मास में उत्तम बनने का पुरुषार्थ

त्योहारों का उद्देश्य न सिर्फ उसे मनाना और दो दिन के बाद चले जाना है बल्कि इनका एक उद्देश्य मानव को सुशिक्षित करना भी है। त्योहारों का उद्देश्य लोगों में जागृति, सद्भावना, एकता, संगठन की वृत्ति पैदा करना और सुसंस्कृत, शिष्ट और सुयोग्य नागरिक बनाना है। जहाँ सामाजिकता की भावना प्रबल होती हो। ऐसी भावनाओं को सबल बनाने के लिए समय प्रति समय त्योहार आने पर हमें स्वयं को सुशिक्षित व प्रशिक्षित करना चाहिए। विशेष तौर पर श्रावण मास को पुण्य का मास कहते हैं। ये भी कहते हैं कि इस मास के दौरान इतने पुण्य करो जो सारे पाप कट जायें।

हमें अपने पर नज़र डालकर देखना चाहिए कि कहां-कहां मेरे से भूलें होती हैं या पाप होते हैं, उनपर गौर करना चाहिए। जैसे कि झूठ बोलना, अधिक बोलना, कड़वा बोलना, जिसके कारण हम स्वयं भी तंग होते और दूसरे भी। ऐसी बातों से बचना चाहिए और आंकलन करना चाहिए कि इसपर कड़ी नज़र रखकर जहाँ हमारी एनर्जी वेस्ट होती है, उसे बचाना चाहिए। व्यावहारिकता में असमानता का भाव रखना भी पाप है। जैसे घर में बेटा और बेटी होते हैं, और उन्हें मिठाई बांटते वक्त बेटे को ज़्यादा और बेटी को कम देते हैं। स्वयं के बच्चों में भी ऊपर-नीचे का भाव, ये भी हमारे जीवन में हीनता पैदा करता है। इसपर भी हमें ध्यान देकर इसे बदलना चाहिए। ऐसे भाव को विकसित करना चाहिए कि हर मनुष्य एक समान है।

ब्र.कु. गंगाधर

कटु बोल बोलना, विशेष तौर पर इस भाव को बदलने के लिए शंकर जी की मूर्ति के ऊपर चंद्रमा दिखाते हैं। जो कि शीतलता का प्रतीक है। हमें भी विकट परिस्थितियों में मगज को शांत रखना चाहिए। मधुर, हितकारी और सत्य बोलना चाहिए। ईर्ष्या करना, ये भी तो बहुत बड़ा पाप है। ईर्ष्या मानसिक विकृति तो है ही, साथ-साथ उसके प्रभाव से शरीर भी विकृत बनता है। आजकल देखने में आता है कि यदि कोई सुखी है, तो उसको देखकर भी हम दुःखी हो जाते हैं। ईर्ष्या की बीमारी उत्पन्न होती है। हमेशा दूसरों की प्रगति और उन्नति देखकर खुश होना चाहिए। किसी ने ठीक कहा है, जिसके अंदर दूसरों के दुःख देखकर करुणा नहीं आती, दया नहीं आती, तो फिर भगवान वहां कैसे आ सकेंगे। छल-कपट करना, दगा देना, खाने-पीने की चीज़ों में मिलावट करना, ये सब भी महापाप हैं। परमात्मा को निर्मल और स्वच्छ हृदय वाले भोले और सरल लोग ही प्रिय हैं। रामचरितमानस में श्री राम ने कहा है,

'निर्मल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।'

कंजूसी करना भी पाप है। कंजूस व्यक्ति वो है जो आवश्यक खर्च भी नहीं करता। कंजूस व्यक्ति सिर्फ जोड़-तोड़ कर इकट्ठा करता रहता है। वो अच्छे कामों में भी पैसे नहीं खर्च करता। ऐसे में हमें स्वयं को शिक्षित करना होगा कि हमें उदार बनना चाहिए। यही मुक्ति का मार्ग है। गुस्सा करना भी पाप की श्रेणी में आता है। हम जहाँ भी जाएं और वहां के वातावरण को भारी कर दें, तंग कर दें, तो ऐसे में ध्यान रहे कि गुस्सा करने से पुण्य का क्षय होता है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हमारी हाजिरी से हर कोई हल्का अनुभव करे, लाइट अनुभव करे। किसी का भी मनोबल तोड़ना, ये भी सूक्ष्म पाप है। जबकि किसी का आत्मविश्वास बढ़ाना, उमंग दिलाना, आगे बढ़ाना, ये पुण्य की श्रेणी में आता है। विशेष तौर पर पुरुषोत्तम मास में हमें पुण्य करने का समय मिलता है, तो हमें देखना चाहिए, स्वयं में झांकना चाहिए और जो भी जाने-अनजाने हमारे व्यवहार से, हमारे विचारों से, संकल्पों से दिन भर में निगेटिव की श्रेणी में आने वाली बातें होती रहती हैं, न सिर्फ उनका प्रायश्चित करना है बल्कि उन्हें रियलाइज़ करके उन्नत, श्रेष्ठ व पुण्य में रिप्लेस करना है।

निर्भय माना कोई विकार की शक्ति नहीं जो मुझे डरा सके

भाग्य विधाता, वरदाता बाप ने हम सभी बच्चों को अनेक वरदान दिये हैं। परन्तु उसमें पहला वरदान दिया कि तुम सभी शिव वंशी हो। एक शिवबाबा के वंश के हो। जिससे पहला-पहला नाता जोड़ा कि हम सब भाई-भाई हैं। दूसरा नाता जोड़ा कि हम ब्रह्मा की औलाद ब्रह्माकुमार कुमारी हैं। ब्राह्मण कुल के हैं। ऊंच धर्म के, ऊंच कुल के, ऊंच चोटी हैं। तो पहले हम संगम के इस वरदान पर खड़े रहते। भविष्य में तो ऊंच पद पाने का लक्ष्य है ही परन्तु अपने आपको पहले इस स्थिति पर रोज़ देखो कि हम शिव वंशी हैं।

बाबा आया है हम बच्चों को गुप्त दान देने। सबसे पहले उसने हमें अपने समान बनाया फिर अपना राज्य भाग्य दिया। तो पहले खुद से हरेक पूछे कि बरोबर मुझे ये नशा है कि हम खुदा के बच्चे हैं। सिर्फ बच्चे हैं, नहीं। परन्तु हमें खुदा ने अपना बनाया है, रौरव नर्क में पड़े हुए को अपनी गोदी में बिठाया है। हम इस समय प्यारे बापदादा की गोदी में खेल रहे हैं, पल रहे हैं। हमें उनका लालन-पालन मिल रहा है। हम ऐसे सर्जन के बच्चे मास्टर सर्जन हैं जो किसी के भी मन का रोग मिटा सकते हैं। मन से तन भी ठीक हो जाता है।

हमारी गाड़ी तीन इंजन से चल रही है। परम बाप, परम शिक्षक और परम सतगुरु के हम तकदीरवान बच्चे हैं। जब हम अपनी इतनी महान तकदीर रोज़ देखते तो अन्दर से निकलता वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! जो मेरा भाग्य बना वह औरों का भी बनें।

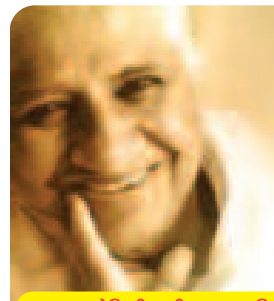
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम इस समय प्यारे बापदादा की गोदी में खेल रहे हैं, पल रहे हैं। हमें उनका लालन-पालन मिल रहा है। हम ऐसे सर्जन के बच्चे मास्टर सर्जन हैं जो किसी के भी मन का रोग मिटा सकते हैं। मन से तन भी ठीक हो जाता है।

हम तो ऊंची चोटी पर बैठे हुए ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण हैं। फिर ब्राह्मण कैसे कहेंगे यह माया आती, यह होता! जैसे कोई छोटी चीज़ का भय बैठ जाता, रस्सी को भी सांप समझ भयभीत हो जाते, वैसे माया है, यह भी भय के भूत का बड़ा सांप दिमाग में रख दिया है। अब सांप तो है ही सांप। वह तो है ही विषैला। वह तो ज़हर ही फूंकेगा। सांप से खेलो नहीं, उससे डरते क्यों हो, वह कोई खिलौना नहीं है। सांप है तो किनारा कर लो। 5 विकार भूत हैं लेकिन वह हैं ही भूत, है ही गन्दी चीज़। गन्दी चीज़ को देखेंगे, दृष्टि डालेंगे या उससे किनारा करके चले जायेंगे! उनके पास जायेंगे तो ज़रूर बदबू आयेगी। किनारे हो जाओ तो बदबू से बच जायेंगे। यह है ही छी-छी दुनिया। मैं अगर शौक से पिक्चर देखूंगी तो वह मुझे ज़रूर खींचेगी। मैंने देखा तो वह ज़रूर आकर्षित करेगी। मैंने अटेन्शन दिया तो उसने खींचा। अगर हम कहें यह तो डर्टी है, तो वह खींच नहीं सकती। ज़रा भी इन्ट्रेस्ट लिया तो खींच ज़रूर होगी।

अगर मैं परचिंतन करूंगी तो दूसरा सुनेगा। बाबा ने कहा बच्चे, इस असार-संसार का समाचार न सुनो, न देखो और न वर्णन करो। यह बड़ी सुन्दर है, यह अच्छी लगती। यह चीज़ अच्छी है, ऐसे सोचा तो खत्म। बाबा की गोदी छोड़कर उतरते क्यों हो! गोदी में सदैव बैठे रहो, उनकी छत्रछाया के नीचे रहो तो कोई की ताकत नहीं जो मेरे पास आये। माया आती है इसका कारण तुम उसे देखते हो। बाबा की गोदी छोड़ते हो। भय का भूत बैठा हुआ है। निर्भय बनो तो माया आ नहीं सकती।

निर्भय माना कोई भी विकार की शक्ति नहीं जो मुझे डरा सके। माया हरा नहीं सकती। मैं तो महावीर-महावीरनी हूँ। दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं जो मुझे भयभीत करे या मुझे अपनी अंगुली दिखाये। आप चैलेन्ज करो कि कोई ऐसी ताकत नहीं जो मुझे हरा सके। यह कहने की बात नहीं लेकिन अन्दर में दृढ़ता हो, इतना मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर रहो।

मन-बुद्धि की स्वच्छता और एकाग्रता ही है वरदान प्राप्त करने का आधार

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

दुनिया में अगर वरदान प्राप्त करना होता है तो अपना मस्तक झुकाना पड़ता है। लेकिन हमको वरदान लेना है तो हमें क्या करना है? बाबा ने भिन्न-भिन्न मुरलियों में यह स्पष्ट किया है कि वरदान लेने के लिए, वरदान अनुभव करने के लिए हमारा मन और बुद्धि आधार है। उसके लिए एक तो हमारा मन एकाग्र होना चाहिए। एकाग्रता से कोई भी चीज़ बुद्धि में डालो तो धारण हो सकती है। हमारा मन अगर एकाग्र नहीं है हलचल में है तो हम वरदान सुनेंगे, बाबा हमें वरदान देगा, सुनने में बहुत अच्छा लगेगा लेकिन अन्दर उसका फल मिले, मेहनत न करनी पड़े। वरदान लिफ्ट का काम करते हैं। सुनना अलग चीज़ है, स्मृति स्वरूप बनना अलग चीज़ है, इसमें सिर्फ अटेन्शन देने की ज़रूरत है। तो वरदान के लिए मन की एकाग्रता चाहिए।

दूसरा बुद्धि हमारी क्लीन और क्लीयर हो। अगर बुद्धि में ज़रा भी सफाई नहीं है और क्लीयर नहीं है तो वरदान मिल नहीं सकता। भोलानाथ को अगर राज़ी करना है तो उसकी सहज विधि है, सच्चाई और सफाई।

सच्चाई और सफाई, सच्ची दिल से जो भी अपनी कमज़ोरी है उसे महसूस करें। कुछ न कुछ तो सभी में कमज़ोरी है। पुराने संस्कार, जिसको हम नेचर कह देते हैं। उस नेचर को भले हम दूसरों से छिपायें वो बात दूसरी है, बाबा के आगे स्पष्ट हो। बाबा को अपना दिलाराम समझ कर महसूसता से, मिटाने चाहती हूँ, इस दृढ़ता से सुनाओ। ऐसे नहीं बाबा को सुना दो ये मेरी कमज़ोरी है, आप मिटा दो। बाबा कहता है मैं मदद तो करता हूँ, पर मिटाना तो आपको ही पड़ेगा।

महसूसता और दृढ़ता से संकल्प करें कि मुझे इस कमी को समाप्त करना ही है, बाबा आप मुझे मदद करें मैं करके दिखाऊंगी। यह दृढ़ता तो हमको ही धारण करना पड़ेगा। सच्चाई और सफाई से हम बाबा को अपना बना सकते हैं। वो संस्कार जो मोटे-मोटे तो खत्म हो गये हैं। सूक्ष्म रूप के संस्कार पुरुषार्थ में गैलप नहीं करने देते हैं। जो मैं बुद्धि से करना चाहूँ, बुद्धि और कहाँ भटके नहीं उसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ।

हर साल हम बाबा से वायदा करते हैं कि अभी हम करके ही दिखायेंगे। अभी अपने आप से पूछूं, जो बाबा से पिछले साल वायदा किया वो प्रैक्टिकल हुआ है? जिसको हम सूक्ष्म संस्कार व नेचर कहते हैं, वो खत्म हुआ है? तो वरदान प्राप्त करने आधार है- मन और बुद्धि हमारी क्लीन-क्लीयर होनी चाहिए। वरदान में तो बाबा कोई न कोई शक्ति देता ही है। तो वरदान में ली हुई शक्तियां हमारे जीवन का आधार होना चाहिए। जिस समय हमको जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय वो शक्ति काम आये। बाबा ने वरदान दिया है कि सब बच्चे मेरे राज़े बच्चे हो।

जितना अन्तर्मुखता से अपने को देखेंगे... बाबा आपको देखेगा

राजयोगिनी दादी जानकी जी

जिस बात का नियम बन जाता है, नियम का पालन करते रहो तो उसका भी बल जमा होता रहता है। भक्ति में भी कहानियां हैं कि कोई नियम को पालन करने वाले बड़े पक्के, आंधी हो या तूफान। बाबा ने जो नियम बना के दिये हैं, उसी आधार पर हमारी जीवन है।

हमारी यह ईश्वरीय फैमिली है, सबसे फ्रेंडशिप है, उसमें कुछ भी मिक्स नहीं है तो दुआयें जमा होती हैं। ज़रा-सा भी देहभान की बांस वाला इन्द्रसभा में बैठ नहीं सकता। ज़रा भी देहभान की बदबू न हो। स्वर्ग में तो पीछे की बात है, अभी तो इन्द्रप्रस्थ में रहते हैं जहाँ भगवान वर्षा करते हैं, हरा-भरा करने के लिए, कांटों को फूल बनाने के लिए। बरसात पड़ने से मौसम चेंज हो जाता है, ऑटोमेटिक फूल खिलने लग जाते हैं। सुन्दर बगीचा बन जाता है। कांटे तो अभी हैं ही नहीं। इतना न्यारापन। फिर एक-दो को आप समान बनाना नहीं पड़ता है, आपेही बन जाते हैं। जो ऐसा बनता है उसके वायब्रेशन से, मित्रता भाव से, सच्चाई से, प्रेम से बन जाते हैं। अपने आप वृद्धि होती जाती है। फिर हरेक कहता है- यह लाइफ मुझे अच्छी मिली है, भाग्य से मिली है।

बाबा ने कितना दिया है, कभी उसे बैठकर, खोलके देखो तो सही। ज्वैलरी भले पहनों नहीं कभी खोलके देखो तो सही। किसी को मुख से कुछ दान नहीं किया तो कैसे पता चलेगा कितना है आपके पास। चलते-फिरते अन्दर से जो भावना है, बाबा ने हमको जितना दिया है वह औरों को देना है। दाता ने इतना दिया है जो देख करके खुश होते हैं। सारे दिन में मेरे से औरों को कितनी खुशी मिली? और मैं ही खुश न रही तो क्या किया? खुशी दी नहीं, चलो खुश तो रहूँ। बाबा सेकण्ड में कांटा निकाल कर इतनी शक्ति देता है, जो चेहरा चमक जाता है। चेक करो क्या अन्दर कांटा है, जो चेहरा मूंझा रहता है? मेरे में कोई देह भान की या पुरानी बातों की बांस न रहे। खुशबू हेल्दी बनाती है, सवेरे बगीचे में जाओ, थोड़ी सैर करके आओ। बाबा ने टाइम भी हमारी पढ़ाई का ऐसा फिक्स किया है जो सारा दिन माइंड हैप्पी रहे। अपने को मुस्कुराना सिखाने के लिए, अमृतवेला करने के पहले अपना चेहरा देखो फिर अमृतवेला करने के बाद देखो। अन्तर्मुखता से अपना चेहरा दिखाई देता है। बाह्यमुखता से औरों को देखते हैं। जितना अन्तर्मुखता से अपने को देखेंगे बाबा आपको देखेगा। नहीं तो बाबा आपको देख रहा है और आप दूसरों को देख रहे हो। इधर-उधर देखने वाला बाबा को नहीं देखता है, अपने को नहीं देखता है। बाह्यमुखता माना सब बातें जानने की इच्छा। अभी तो समझते हैं न्यूज़ ज़रूरी है, बाबा हमको कहता था न्यूज़ पढ़ने का मतलब? बाबा पढ़ता था सेवा के लिए न कि अन्दर न्यूज़ समाने के लिए। सबसे बड़ा न्यूज़ पेपर है हमारी मुरली। सारे 84 जन्मों की कहानी का न्यूज़ पेपर है ये।